Shodh Prabha: A Multidisciplinary Journal
ISSN: 3108-2726 (Online), Volume-2, Issue-4, (July - August) 2026

डॉ. रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास 'धूनी का धुआँ' में इतिहास, मानवतावाद और सांस्कृतिक पुनर्जागरण

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिन्दी), राजकीय महाविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)

सारांश

डॉ. रांगेय राघव का जीवनीपरक उपन्यास 'धूनी का धुआँ' हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और मानवतावादी दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है। यह उपन्यास नाथ सम्प्रदाय के महान योगी गोरखनाथ के जीवन के माध्यम से मध्यकालीन भारतीय समाज की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार ने इतिहास, लोकश्रुतियों तथा अपने गहन शोध-अनुभव के आधार पर गोरखनाथ को केवल एक योगी या सिद्धपुरुष के रूप में नहीं, बल्कि युग-सुधारक, समाज-संशोधक और मानवतावादी चिन्तक के रूप में चित्रित किया है। इस लेख में 'धूनी का धुआँ' के कथानक, इतिहास-दृष्टि, गोरखनाथ के व्यक्तित्व, उनके योग-दर्शन, नारी-दृष्टि, सामाजिक समरसता तथा रांगेय राघव की औपन्यासिक कला का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही यह प्रतिपादित किया गया है कि यह कृति केवल अतीत का पुनर्निर्माण नहीं करती, बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का संदेश देती है।

बीज शब्द- रांगेय राघव, धूनी का धुआँ, गोरखनाथ, नाथ सम्प्रदाय, जीवनीपरक उपन्यास, मानवतावाद, इतिहास-दृष्टि, योग-दर्शन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

भूमिका

हिन्दी साहित्य में जीवनीपरक उपन्यासों की परम्परा को समृद्ध बनाने वाले प्रमुख साहित्यकारों में डॉ. रांगेय राघव का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय इतिहास और संस्कृति के उन महापुरुषों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया, जिनका योगदान समय के साथ धूमिल पड़ गया था, किन्तु जिनकी वैचारिक प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। 'धूनी का धुआँ' इसी परम्परा की एक प्रतिनिधि कृति है, जिसमें नाथ सम्प्रदाय के महान योगी गोरखनाथ के जीवन और उनके युग का पुनर्सृजन किया गया है। यह उपन्यास केवल एक महापुरुष की जीवनी नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के उस संक्रमणकाल का सांस्कृतिक दस्तावेज़ है जिसमें राजनीतिक विघटन, सामाजिक विषमता, धार्मिक आडम्बर तथा नैतिक पतन के बीच एक नवीन मानवीय चेतना जन्म ले रही थी।

रांगेय राघव की विशेषता यह है कि वे इतिहास को केवल घटनाओं का क्रम नहीं मानते, बल्कि मनुष्य और समाज के विकास की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि 'धूनी का धुआँ' में गोरखनाथ का जीवन इतिहास से पृथक् नहीं, बल्कि उसी का सक्रिय अंग बनकर उभरता है। लेखक ने स्वयं गोरखनाथ पर गहन शोध किया था; फलतः उपन्यास का ऐतिहासिक आधार अत्यन्त सुदृढ़ है। डॉ. लालसाहब सिंह के अनुसार- "कथानक की दृष्टि से इस उपन्यास की महत्ता इस बात में निहित है कि लेखक ने नायक के रूप में एक ऐसे व्यक्ति को चुना है जिसके जीवन में प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण घटनाओं की कमी नहीं रही। लेखक ने उस काल की अन्य विचारधाराओं- वैष्णव, शैव, बौद्ध, जैन, इस्लाम की तुलना की है और तत्कालीन परिस्थितियों में गोरक्ष, उनसे गोरक्ष और गोरक्ष से सब- इस सापेक्ष दृष्टिकोण

से देखने का प्रयास किया है।"[1] इस प्रकार रांगेय राघव का उद्देश्य किसी सम्प्रदाय का महिमामण्डन नहीं, बल्कि इतिहास की बहु-आयामी व्याख्या करना था। इसी कारण 'धूनी का धुआँ' इतिहास, दर्शन और साहित्य का अद्भुत समन्वय बन जाता है।

गोरखनाथः इतिहास, परम्परा और युगीन संदर्भ

गोरखनाथ भारतीय अध्यात्म, योग और सामाजिक चेतना के इतिहास में एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने सिद्ध परम्परा से प्राप्त योग-साधना को नवीन दिशा प्रदान की। नाथ सम्प्रदाय का संगठित स्वरूप उनके व्यक्तित्व के साथ ही प्रतिष्ठित हुआ। उन्होंने योग को केवल व्यक्तिगत सिद्धि का साधन न मानकर सामाजिक पुनर्जागरण का माध्यम बनाया। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने गोरखनाथ के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है- "गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे। उन्होंने जिस धातु को छुआ, वही सोना हो गया। दुर्भाग्यवश इस महान् धर्मगुरु के विषय में ऐतिहासिक कही जाने वाली बहुत कम बातें रह गई हैं।"[2] यह कथन गोरखनाथ की ऐतिहासिक महत्ता के साथ-साथ उनके जीवन से जुड़े स्रोतों की सीमाओं की ओर भी संकेत करता है। रांगेय राघव ने इन्हीं सीमित ऐतिहासिक तथ्यों, लोकपरम्पराओं और नाथ साहित्य के आधार पर गोरखनाथ का ऐसा व्यक्तित्व निर्मित किया है जो इतिहास की दृष्टि से विश्वसनीय होने के साथ-साथ औपन्यासिक दृष्टि से भी अत्यन्त प्रभावशाली है।

उपन्यास का ऐतिहासिक परिवेश भारत के उस युग का है जब राजनीतिक विखण्डन, सामन्ती संघर्ष, धार्मिक अराजकता और सामाजिक विषमता चरम पर थी। छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त भारत विदेशी आक्रमणों की चुनौती का सामना कर रहा था। समाज जातिगत विभाजनों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। धर्म अपने मूल स्वरूप से विचलित होकर कर्मकाण्ड और वामाचार का आश्रय बनता जा रहा था। ऐसे समय में गोरखनाथ का उदय केवल एक योगी का उदय नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मरक्षा और आत्मशुद्धि की ऐतिहासिक आवश्यकता थी।

रांगेय राघव ने गोरखनाथ को चमत्कारों के माध्यम से महान सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उनके विचारों, कर्म और लोकमंगल की भावना के माध्यम से उनकी महानता को प्रतिष्ठित किया है। उनके अनुसार गोरखनाथ का वास्तविक योगदान भारतीय धर्म-साधना को वामाचार, कामोपासना और बाह्याचार से मुक्त कर संयम, आत्मानुशासन और लोक-कल्याण की दिशा देना था। डॉ. कोमल सिंह सोलंकी के शब्दों में- "सामान्यतः गोरखनाथ ने अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आने वाली योग साधना का आश्रय लिया था। उनके मार्ग को हठयोग कहा गया है। हठयोगी के लिए काया ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। कुण्डलिनी शक्ति में ही इस शरीर की सबसे कार्यकारिणी शक्ति है। गोरखनाथ मत में प्रथम सिद्धान्त यह है कि जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में है, वह सभी पिण्ड में है, पिण्ड मानो ब्रह्माण्ड का संक्षिप्त संस्करण है।"[3] उनके लिए साधना का केन्द्र बाह्य संसार नहीं, बल्कि मनुष्य का अन्तःकरण है। यही कारण है कि वे आत्मशोधन, इन्द्रियनिग्रह और आन्तरिक अनुशासन को वास्तविक आध्यात्मिक उपलब्धि का आधार मानते हैं।

रांगेय राघव ने गोरखनाथ को केवल दार्शनिक या योगी के रूप में चित्रित नहीं किया, बल्कि उन्हें एक सक्रिय समाज-सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया है। वे जातिगत भेदभाव, धार्मिक संकीर्णता, स्त्री के वस्तुकरण और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। उनके लिए योग का अर्थ संसार से पलायन नहीं, बल्कि लोक-कल्याण के लिए आत्मशक्ति का विकास है। इसी कारण उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व मानवतावादी चेतना का प्रतीक बन जाता है। प्रो. ये. प. चेलिशेव ने रांगेय राघव के साहित्य का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज की प्रगतिशील चेतना और परिवर्तनकारी शक्तियों को विशेष महत्त्व दिया है। उपन्यास में चित्रित ऐतिहासिक वातावरण के सम्बन्ध में यह मत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि रांगेय राघव ने केवल अतीत का पुनरुत्थान नहीं किया, बल्कि उसे आधुनिक दृष्टि से

पुनर्व्याख्यायित किया है। इस उपन्यास में "रांगेय राघव ने यह दिखाने का यत्न किया है कि किस तरह सामन्तों और पुरोहितों के दमन और मनमानेपन के विरोध में जनता में विद्रोह की भावना भड़क उठी और उस समय के भारत में धार्मिक समुदायों के आन्दोलनों के लोकतंत्रीय स्वरूप की चर्चा की है।"[4] वास्तव में रांगेय राघव ने गोरखनाथ के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की उसी चेतना को अभिव्यक्त किया है जो आगे चलकर संत परम्परा और भक्ति आन्दोलन में अधिक व्यापक रूप से विकसित हुई।

गोरखनाथ का व्यक्तित्व उपन्यास में निरन्तर विकासमान दिखाई देता है। गुरु की खोज से लेकर आत्मानुभूति, योग-सिद्धि, समाज-सुधार और लोककल्याण तक उनकी यात्रा भारतीय संस्कृति के आत्मसंघर्ष की यात्रा भी है। इसी कारण वे किसी सम्प्रदाय-विशेष के प्रतिनिधि न रहकर समस्त मानवता के साधक प्रतीत होते हैं। उनकी धूनी केवल तपस्या का प्रतीक नहीं, बल्कि उस ज्ञान-ज्योति का प्रतीक है जिसकी ऊष्मा से रूढ़ियाँ, अन्धविश्वास और सामाजिक अन्याय भस्म होते हैं तथा एक नवीन मानवतावादी चेतना का उदय होता है।

गोरखनाथ का मानवतावाद और सामाजिक पुनर्जागरण

रांगेय राघव के 'धूनी का धुआँ' का सबसे सशक्त पक्ष गोरखनाथ का मानवतावादी व्यक्तित्व है। उपन्यासकार ने उन्हें किसी चमत्कारी सिद्धयोगी अथवा सम्प्रदाय-विशेष के आचार्य के रूप में सीमित नहीं किया, बल्कि ऐसे युगपुरुष के रूप में चित्रित किया है जो सम्पूर्ण मानव समाज को रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और सामाजिक विषमता से मुक्त कर नई दिशा देना चाहता है। गोरखनाथ के लिए योग का उद्देश्य व्यक्तिगत मुक्ति नहीं, बल्कि लोकमंगल है। वे अपने साधना-पथ को समाज से जोड़ते हैं और मनुष्य की आत्मिक उन्नति को सामाजिक परिवर्तन का आधार मानते हैं। उपन्यास में गुरु-प्राप्ति से पूर्व अनंगवज्र के रूप में गोरखनाथ की आकांक्षा ही उनके व्यक्तित्व की दिशा स्पष्ट कर देती है- "केवल शाश्वत सुख चाहता हूँ, ताकि मुझे शांति मिले और लोक का अंधकार दूर करना चाहता हूँ। चाहता हूँ वह मार्ग ढूँढ़ सकूँ जिस पर चलकर संसार का कल्याण हो सके।"[5] इस प्रकार उनका योग आत्मकेन्द्रित नहीं, बल्कि लोकाभिमुख है। यही दृष्टि आगे चलकर उन्हें भारतीय समाज के एक महान् लोकनायक के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

गोरखनाथ के लिए मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान उसका मानव होना है, न कि उसकी जाति, वर्ण अथवा सम्प्रदाय। इसलिए वे सामाजिक समरसता का उद्घोष करते हुए कहते हैं- "भेदों को छोड़ो..... लोक के कल्याण को उठो। आडम्बर, जाति-घृणा को छोड़ो।"[6] यह विचार केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि तत्कालीन सामाजिक संरचना के विरुद्ध एक वैचारिक विद्रोह है। रांगेय राघव ने इसी कारण गोरखनाथ को भारतीय सामाजिक चेतना के अग्रदूत के रूप में चित्रित किया है।

वामाचार का प्रतिरोध और योग-दर्शन

उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक पक्ष वामाचार और भोगवादी साधना के विरुद्ध गोरखनाथ का संघर्ष है। रांगेय राघव ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह दिखाया है कि सिद्ध परम्परा के अन्तिम चरण में योग-साधना अनेक विकृतियों से ग्रस्त हो गई थी। तांत्रिक प्रभाव के कारण कामोपासना, योनि-पूजा तथा बाह्याचार को आध्यात्मिक साधना का रूप दिया जाने लगा था। ऐसे समय में गोरखनाथ ने हठयोग, आत्मसंयम और काया-शोधन को साधना का वास्तविक आधार बनाया। रांगेय राघव ने इस दार्शनिक आधार को अत्यन्त कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार गोरखनाथ का योग पलायन का मार्ग नहीं, बल्कि आत्मानुशासन के माध्यम से सामाजिक पुनर्निर्माण का

साधन है। इसी कारण उपन्यास में योग-दर्शन किसी रहस्यवाद का नहीं, बल्कि व्यावहारिक नैतिकता का दर्शन बनकर सामने आता है।

गोरखनाथ की नारी-दृष्टिः पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता

गोरखनाथ के सम्बन्ध में प्रचलित सबसे बड़ी भ्रान्ति उन्हें नारी-निन्दक मानने की रही है। रांगेय राघव ने इस धारणा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में पुनर्मूल्यांकन किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि गोरखनाथ का विरोध स्त्री से नहीं, बल्कि उस विकृत साधना-पद्धति से था जिसमें स्त्री को केवल भोग की वस्तु और साधना के उपकरण के रूप में देखा जाने लगा था। लेखक भूमिका में लिखते हैं- "गोरखनाथ जब जन्मे थे, भारत में घोर योनि-पूजा प्रचलित थी तभी वे इतने स्त्री विरोधी लगते हैं। वे स्त्री के मातृत्व को फिर से स्थापित करना चाहते थे क्योंकि स्त्री को तब बौद्धों और तांत्रिकों ने साधना के लिए केवल योनिधारिणी के रूप में लिया था। वैसे योगी और साधक के लिए तो स्त्री का निषेध गोरख का विशेष स्वर था।"[7] यह व्याख्या गोरखनाथ के व्यक्तित्व को एक नई दृष्टि प्रदान करती है। उनके लिए स्त्री का सर्वोच्च स्वरूप मातृत्व है। इसीलिए वे सामाजिक जीवन में नारी के सम्मान और उसकी गरिमा की पुनर्स्थापना का प्रयास करते हैं। आधुनिक स्त्री-विमर्श की दृष्टि से उनके विचारों की पुनर्व्याख्या सम्भव है, किन्तु अपने समय की ऐतिहासिक परिस्थितियों में उनका यह दृष्टिकोण नारी की गरिमा की पुनर्प्रतिष्ठा का प्रयास था।

रांगेय राघव की इतिहास-दृष्टि

'धूनी का धुआँ' की सबसे बड़ी कलात्मक उपलब्धियों में इतिहास और कल्पना का संतुलित समन्वय है। रांगेय राघव इतिहासकार नहीं, उपन्यासकार हैं; इसलिए वे उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाकर उनमें औपन्यासिक संवेदना का संचार करते हैं। जहाँ इतिहास मौन है, वहाँ उनकी कल्पना कथा को जीवन्त बनाती है, किन्तु कहीं भी ऐतिहासिक विश्वसनीयता भंग नहीं होती। यही कारण है कि उपन्यास में गोरखनाथ का व्यक्तित्व किसी दन्तकथा का पात्र नहीं बनता, बल्कि एक ऐतिहासिक मनुष्य के रूप में विकसित होता है। मत्स्येन्द्रनाथ का उद्धार, योगियों की सक्रियता, सामाजिक संघर्ष तथा धार्मिक विमर्श- इन सभी प्रसंगों में इतिहास और कल्पना का सन्तुलन स्पष्ट दिखाई देता है।

रांगेय राघव का इतिहास-बोध परम्परागत इतिहास-लेखन से भिन्न है। वे केवल राजाओं और युद्धों का इतिहास नहीं लिखते, बल्कि समाज, संस्कृति और विचारों का इतिहास रचते हैं। उनके अनुसार किसी युग का वास्तविक इतिहास उसके महापुरुषों की सामाजिक भूमिका में निहित होता है। इस दृष्टि से 'धूनी का धुआँ' गोरखनाथ के माध्यम से भारतीय समाज के एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आख्यान बन जाता है। रांगेय राघव गोरखनाथ को किसी एक सम्प्रदाय का नेता नहीं, बल्कि जनचेतना के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके यहाँ इतिहास का केन्द्र सत्ता नहीं, समाज है; राजसत्ता नहीं, लोकशक्ति है; और चमत्कार नहीं, मनुष्य की नैतिक चेतना है।

पात्र-योजना और चरित्र-चित्रण

यद्यपि 'धूनी का धुआँ' में अनेक पात्र हैं, किन्तु सम्पूर्ण कथा गोरखनाथ के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द संचालित होती है। मत्स्येन्द्रनाथ, भर्तृहरि, जालंधरनाथ, कण्हपा, महालंग, सामदेई, विमला आदि पात्र गोरखनाथ के चरित्र को उभारने में सहायक बनते हैं। जीवनीपरक उपन्यास होने के कारण लेखक ने गौण पात्रों का अत्यधिक मनोवैज्ञानिक विस्तार नहीं किया, अपितु उन्हें कथ्य की आवश्यकता के अनुरूप विकसित किया है।

गोरखनाथ का चरित्र उपन्यास में निरन्तर गतिशील है। साधक से सिद्ध, सिद्ध से लोकनायक और लोकनायक से युगद्रष्टा तक की उनकी यात्रा उपन्यास की मूल संरचना का आधार है। यही कारण है कि पाठक के सामने उनका व्यक्तित्व किसी धार्मिक आचार्य की अपेक्षा एक ऐसे मानवतावादी चिन्तक के रूप में उभरता है जिसकी साधना का अंतिम लक्ष्य सम्पूर्ण मानव समाज का कल्याण है।

समसामयिक प्रासंगिकता और उपन्यास की वैचारिक उपलब्धि

यद्यपि 'धूनी का धुआँ' का कथानक मध्यकालीन भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, तथापि उसकी वैचारिक प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। डॉ. रांगेय राघव ने अतीत का चित्रण केवल इतिहास-बोध के लिए नहीं किया, बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी उसमें मार्गदर्शन के सूत्र खोजे हैं। जातीय विभाजन, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता, स्त्री की गरिमा, नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा सत्ता का दुरुपयोग जैसी समस्याएँ आज भी किसी-न-किसी रूप में विद्यमान हैं। ऐसे समय में गोरखनाथ का मानवतावादी दृष्टिकोण, समरस समाज की कल्पना तथा लोककल्याण की भावना विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होती है।

रांगेय राघव ने गोरखनाथ को इतिहास के किसी जड़ पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें निरन्तर सक्रिय सामाजिक शक्ति के रूप में चित्रित किया है। उनका योग पलायन नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का पर्याय है। वे धर्म को लोकमंगल का माध्यम मानते हैं और मनुष्य के भीतर स्थित नैतिक चेतना को जगाने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टि से 'धूनी का धुआँ' आधुनिक भारतीय समाज के लिए भी उतना ही सार्थक है जितना गोरखनाथ के युग के लिए था। उपन्यास में राजनीतिक विघटन, सामन्ती शोषण, वर्ण-व्यवस्था, धार्मिक आडम्बर तथा विदेशी आक्रमणों की पृष्ठभूमि में गोरखनाथ का व्यक्तित्व एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बनकर उभरता है। वे किसी सम्प्रदाय या वर्ग-विशेष के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण की भावना से प्रेरित युगपुरुष हैं। इसीलिए उनकी साधना में सामाजिक न्याय, समता, संयम और आत्मानुशासन जैसे जीवन-मूल्य केन्द्र में हैं। रांगेय राघव का यह उपन्यास यह भी सिद्ध करता है कि इतिहास का पुनर्पाठ केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि वर्तमान की समस्याओं के समाधान का माध्यम भी हो सकता है। लेखक ने गोरखनाथ के माध्यम से यह संदेश दिया है कि किसी भी समाज का वास्तविक उत्थान बाह्य परिवर्तन से नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना, विचार और चरित्र के परिष्कार से सम्भव है। यही 'धूनी का धुआँ' की स्थायी प्रासंगिकता है।

निष्कर्ष-

डॉ. रांगेय राघव का 'धूनी का धुआँ' हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ जीवनीपरक उपन्यासों में विशिष्ट स्थान रखता है। यह केवल गोरखनाथ के जीवन का औपन्यासिक पुनर्निर्माण नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म और समाज की एक गम्भीर वैचारिक व्याख्या भी है। लेखक ने अपने शोध-अनुभव, ऐतिहासिक स्रोतों तथा सृजनात्मक कल्पना के समन्वय से गोरखनाथ को एक ऐसे मानवतावादी युगसाधक के रूप में प्रतिष्ठित किया है जिसने भारतीय समाज को वामाचार, रूढ़ियों, जातिगत विषमता और धार्मिक अन्धविश्वासों से मुक्त कर संयम, समरसता और लोकमंगल का मार्ग दिखाया। उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसमें इतिहास और साहित्य का सफल समन्वय दिखाई देता है। ऐतिहासिक तथ्यों की प्रामाणिकता, चरित्रों की स्वाभाविकता, दार्शनिक गहराई, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक दृष्टि इसे सामान्य ऐतिहासिक उपन्यासों से अलग पहचान प्रदान करती है। यद्यपि दार्शनिक विवेचन की अधिकता के कारण कहीं-कहीं कथानक की गति मन्द पड़ती है, तथापि वही इसकी वैचारिक गरिमा का भी आधार बनती है। गोरखनाथ के माध्यम से रांगेय राघव ने यह प्रतिपादित किया है कि किसी महापुरुष की महानता उसके चमत्कारों में नहीं, बल्कि उसके

सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय दृष्टि और युग-परिवर्तनकारी चेतना में निहित होती है। उनका योग-दर्शन आत्मसंयम, लोकमंगल और समता का दर्शन है। इसी कारण 'धूनी का धुआँ' केवल एक ऐतिहासिक जीवनीपरक उपन्यास न रहकर भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण आख्यान बन जाता है। वर्तमान समय में जब समाज पुनः अनेक प्रकार की वैचारिक, धार्मिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब 'धूनी का धुआँ' का पुनर्पाठ और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। यह कृति पाठक को अतीत से जोड़ते हुए वर्तमान को समझने और भविष्य के लिए मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज की कल्पना करने की प्रेरणा देती है। यही डॉ. रांगेय राघव की साहित्यिक दृष्टि की सबसे बड़ी सफलता और इस उपन्यास की स्थायी उपलब्धि है।

सन्दर्भ सूची-

1- डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास- डॉ. लालसाहब सिंह, पृष्ठ 250

2- नाथ सम्प्रदाय- डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 96

3- नाथ पंथ और निर्गुण संत काव्य- डॉ. कोमल सिंह सोलंकी, पृष्ठ 113

4- प्रगतिशील भारतीय साहित्यकारों के छविचित्र- प्रो. ये. प. चेलीशेव, पृष्ठ 150

5- रांगेय राघव की सम्पूर्ण औपन्यासिक जीवनियाँ, धूनी का धुआँ, पृष्ठ 381

6- वही, पृष्ठ 405

7- वही, पृष्ठ भूमिका, 361